बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 99/2024) Year: 6th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 05/02/2024

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ बेमौसमी उत्पाद हेतु सब्जी मटरए मूलीए पालकए गाजरए राई सागए फ्रेंचबीन की भी बुआई करें। ➢ ग्रीष्म कालीन टमाटरए बैगनए शिमला मिर्च/मिर्च रोपाई हेतु पौधशाला तैयार कर लें। ➢ शीत ऋतु की खड़ी फसलों में समुचित जलए खरपतवारए पोषक तत्व तथा पादप सुरक्षा प्रबंधन करे । ➢ अगेती रोपाई हेतु पॉलीबैग्स में कद्दुवर्गीय सब्जियों की बुआई कर लें । ➢ ग्रीष्म कालीन भिंडीए कद्दू वर्गीय व पत्तेदार सब्जियों की बुआई हेतु खेत की तैयारी कर लें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	➢ फ़रवरी माह में ठण्ड का असर काम होने लगता है, ऐसे में तापमान में धीरे धीरे वृद्धि होने लगती है, जिसका अच्छा एवं बुरा असर फसलों में देखने को मिलता है। जहाँ एक ओर यह मौसम फसलों के समुचित विकास के लिए अच्छा होता है वहीँ दूसरी ओर फसलों में रोग लगने की संभावनाएं बढ़ती हैं। ऐसे में फसलों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। ➢ गेहूं की फसल में उर्वरकों की अंतिम मात्रा का प्रयोग अवश्य ही कर लेना चाहिए। पिछले दिनों हुए बरसात का लाभ लेते हुए युरिया के साथ जिंक एवं सल्फर का प्रयोग करें । ➢ बीज के लिए उगाये जाने वाले फसलों में उर्वरकों की संतुलित मात्रा का प्रयोग करें । कीट एवं रोगों का समुचित प्रबंधन करें और प्रक्षेत्र को खरपतवार रहित रखें। **मृदाप्रबंधन-** **गेंहू–**गेंहू की फसल में 120.–60–40 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजन फास्फोरस तथा पोटाश का प्रयोग करना चाहिये। फास्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिये।श्अगर एक सिंचाई उपलब्ध हो तोषेष आधी मात्रा बुवाई के 20–25 दिन बाद क्रन्तिक जड़ निकलने की अवस्था पर करना चाहिये। **गेंहू–**

		अगर दो सिंचाई उपलब्ध हो गेंहू की फसल में 120.–60–40 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजन फास्फोरस तथा पोटाश का प्रयोग करना चाहिये। फास्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिये।श्नत्रजन की शेष मात्रा को दो भागों में देना चाहिये एक भाग बुवाई के 20–25 दिन बाद क्रन्तिक जड़ निकलने की अवस्था पर करना चाहिये। तथा दूसरा भाग बुवाई के चालीस से पैतालिस दिन बाद कल्ले फूटने के अवस्था में देना चाहिये। **चना** देर से बोई गयी (15 नवम्बर से 15 दिसम्बर) या यह चने के पौधे की वृद्धि में कमी होने की दषा में एक प्रतिषत जलघुलनषील एनःपीःकेः मिश्रण का पर्णीय क्षिणकाव करने से फसल में व्द्धि अच्छी होती है।
3-	पशुपालन प्रबंधन	सर्दी के मौसम में पशुओं के पोषण की व्यवस्था ठीक रखनी पड़ती हे। पशुओं को सही भोजन नहीं मिलने से उनमे बीमारियों से लड़ने की क्षमता क्षीण हो जाती है, जिससे पशु जल्दी व बार बार बीमार हो जाते हैं। सर्दियों में पशुओं को बीमारी से बचाने के लिए कम से कम 25 प्रतिशत हरा चारा व 75 प्रतिशत बढ़िया सूखा चारा खिलाना चाहिए। पशु को सप्ताह में दो बार गुड़ अवश्य खिलाएं। बिनौला, दाना, खली, खनिज मिश्रण व सैंधा नमक भी पशु राशन में अवश्य सम्मिलित करें जिससे पशुओं की सर्दियों में बीमारी से लड़ने की क्षमता बनी रहे साथ ही उनकी उत्पादकता भी प्रभावित न हो।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ राई/सरसों में माँहू के जैविक नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन (नीम ऑयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.50 लीटर प्रति हे0 की दर से 600–700 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें जिससे परभक्षी कीटों व मित्र कीटों का संरक्षण किया जा सके। कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 250 मिली0 की मात्रा को 600–750 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ चना/मटर/ मसूर में फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हे0 की दर से खेत मे लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250–300 मिली0 300–400 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें। सेमीलूपर कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 2 लीटर मात्रा प्रति हे0 की दर से 600–700 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ अरहर में फली की मक्खी कीट से प्रकोपित फलियों की दशा में एसीफेट 75 प्रतिशत एस0 पी0 1 ग्राम प्रति लीटर अथवा लैम्ब्डा साह्यलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 0.8 मिली0 प्रति लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना

		चाहिए। टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतू फेरोमोन प्रपंच 3–4 / एकड़ लगाए व बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ आम में मिली बग कीट व भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0एल0 की 0.3 मिली0 अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ Not received
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	फरवरी यानी माघ–फाल्गुन माह में भी वातावरण ठंडा होता है परन्तु जनवरी माह की तुलना में तापक्रम अधिक होता है। गर्मी का थोड़ा आभास होने लगता है। वायुगति बढ़ जाती है और सापेक्ष आद्रता बीते माह की अपेक्षा कम हो जाती है। माह के दूसरे पखवाड़े से मौसम सुहाना होने लगता है। औसतन अधिकतम एवं न्यूनतम तापक्रम क्रमशः 28.8 एवं 12.5 डिग्री सेन्टीग्रेड होता है। फरवरी माह के दौरान उद्यान फसलों में संपन्न किये जाने वाले प्रमुख समसामयिक कृषि कार्यो का विवरण निम्नवत है – **आम में मुख्य कृषि कार्य** ➢ इस समय आम के पेड़ पर फूल व फल आना शुरू हो जाता है। छोटे फलों को गिरने से रोकने के लिए 2,4–डी नामक दवा 2 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें। छिडकाव फल मटर के दाने के बराबर हो जाने पर करना चाहिए। ➢ आम मे चुर्णिल आसिता रोग से बचाव के लिए 2 ग्राम प्रति 1 लिटर के हिसाब से घुलनशील गंधक का छिडकाव करें । आम में यदि पुष्प कुरूपता दिखाई दे रही है तो गुच्छों को तुरंत काटकर नष्ट कर दें। ➢ श्यामव्रण (एन्थ्रेक्नोज) इस रोग की उग्रता की स्थिति में पत्तों एवं बढ़ते फलों पर इंडोफिल एम–45 नामक फफूंदनाशी (0.2:) का 2–3 छिड़काव करना चाहिए । रोग ग्रसित टहनियों तथा इसके प्रभाव से झड़े पत्तों को जलाना या गाड़ देना लाभकारी होता है । ➢ फफूंद जनित पिंक रोग के कारण पूर्ण विकसित पेड़ों की टहनियां एक दृएक करके सूखने लगती है । इसके नियंत्रण के लिए सूखी टहनियों को 15 से. मी. नीचे से छांट कर उसके कटे भाग पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का लेप लगाना चाहिए तथा इसमें फफूंदनाशी का 2–3 छिड़काव करना चाहिए । ➢ आम में भुनगा कीट के रोकथाम के लिए इमिड़ाक्लोप्रिड 1.0 मिली. प्रति 3

		लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। **पपीता में मुख्य कृषि कार्य** ➢ पपीता में तना गलन रोग के कारण भूमि की सतह से तना सडना शुरू हो जाता है । पौधा गिर जाता है। ➢ इस रोग से बचाव के लिए पानी का निकास ठीक करें तथा कॅप्टान 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। **शरीफा (सीताफल) में मुख्य कृषि कार्य** ➢ शरीफा जिसे सीताफल भी कहा जाता है। सीताफल में स्केल कीट टहनियां व फूलों का रस चूसकर उसे हानि पहुंचाता है। ➢ इसके नियंत्रण के लिए क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 50 से 100 ग्राम प्रति पेड़ थाले में 10 से 25 सेंटीमीटर की गहराई पर मिलाएं। पेड़ पर डायमिथोएट 30 ई.सी. दवा 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिडकाव करें। **नींब में मुख्य कृषि कार्य** ➢ नींबू में सिट्रस कैंकर के कारण टहनियां, पत्तियां व फलों पर भूरे रंग के मध्य से फटे, खुरदरे व कॉर्कनुमा धब्बे बन जाते हैं। ➢ इसके नियंत्रण के लिए स्ट्रेप्टोसाइकिलन 100 मिलीग्राम व ताम्रयुक्त कवकनाशी दवा 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिडकाव करें। ➢ नींबू के पौधों के मूलवृन्त तैयार करने के लिए नर्सरी में बीजों की बुवाई करें। मूलवृन्त एक वर्ष के हो जाएं तब उन पर कलिकायन करें। ➢ वायरस को फैलाने वाले कीड़ों के नियंत्रण का समुचित प्रबंध करें । इसके लिए नये कल्ले निकलते समय इमिडाक्लोरप्रिड (3 मिलीध10 ली.) या डाइमेथोएट (15 मिली.ध10 ली.) का घोल बनाकर दो–दो छिड़काव एकान्तर विधि से करें । ➢ किन्नो,संतरा व नींबू आदि फल वृक्षों में फूल एवं फल लगना प्रारंभ हो जाता है। इन पौधों के थालों की गुड़ाई कर खाद–उर्वरक डालें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
7.	वानिकी प्रबंधन	➢ वानिकी पौधशाला में पुरानी पौध का स्थानांतरण सावधानी के साथ करें और मिट्टी से जुड़ी जड़ों को तेज धार वाले औजार से काटें। स्थानांतरण पष्चात् पौधों की सिंचाई करें। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें। ➢ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों के थालों की निराई गुड़ाई, सिंचाई और टहनियों की छटाई करें ।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ अमित मिश्रा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ दिनेश गुप्ता
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ पंकज कुमार ओझा
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
6. डॉ विवेक सिंह	